Columbia University-Department of History
HINDI LANGUAGE EXAM

Please provide a good literary translation of the entire passage in the time allowed. Use of a dictionary is permitted. Choose one of the two passages.

Time allowed: 2 hours

[२३] जब यजमान विद्याहीन हुए और आप कुछ पाठ पूजा पढ़कर अभिमान में आके सब लोगों ने परस्पर सम्मति करके राजा आदि से कहा कि ब्राह्मण और साधु अदण्ड्य हैं, देखो ! 'ब्राह्मणो न हन्तव्यः' 'साधुर्न हन्तव्यः' ऐसे २ वचन जो कि सच्चे ब्राह्मण और साधुओं के विषय में थे सो पोपों ने अपने पर घटा लिये । और भी झूठे २ वचन-युक्त ग्रन्थ रच कर उनमें ऋषि मुनियों के नाम धर के उन्हीं के नाम से सुनाते रहे । उन प्रतिष्ठित ऋषि महर्षियों के नाम से अपने पर से दण्ड की व्यवस्था उठवा दी । पुनः यथेष्टाचार करने लगे । अर्थात् ऐसे कड़े नियम चलाये कि उन पोपों की आज्ञा के विना सोना, उठना, बैठना, जाना आना' खाना, पीना आदि भी नहीं कर सकते थे । राजाओं को ऐसा निश्चय कराया कि पोप-संज्ञक, कहने मात्र के ब्राह्मण साधु चाहे सो करें, उनको कभी दण्ड न देना अर्थात् उन पर मन में भी दण्ड देने की इच्छा न करनी चाहिये । जब ऐसी मूर्खता हुई तब जैसी पोपोंकी इच्छा हुई वैसा करने लगे अर्थात् इस बिगाड़ के मूल महाभारत युद्ध से पूर्व एक सहस्र वर्ष से प्रवृत्त हुए थे । क्योंकि उस समय में ऋषि मुनि भी थे तथापि कुछ २ आलस्य, प्रमाद, ईर्ष्या, द्वेष के अंकुर उगे थे । वे बढ़ते २ वृद्ध हो गये जब सच्चा उपदेश न रहा तब आर्य्यावर्त्त में अविद्या फैलकर परस्पर' में लड़ने झगड़ने लगे क्योंकि—

Columbia University-Department of History
HINDI LANGUAGE EXAM

Please provide a good literary translation of the entire passage in the time allowed. Use of a dictionary is permitted. Choose one of the two passages.

Time allowed: 2 hours

[२१] वैसे ही आर्य्यावर्त्त देश में जानो पोपजी ने लाखों अवतार लेकर लीला फैलाई हो । अर्थात् राजा और प्रजा को विद्या न पढ़ने देना, अच्छे पुरुषों का संग न होने देना, रात दिन बहकाने के सिवाय दूसरा कुछ भी काम नहीं करना है, परन्तु यह बात ध्यान में रखना कि जो २ छल-कपटादि कुत्सित व्यवहार करते हैं वे ही पोप कहाते हैं । जो कोई उनमें भी धार्मिक विद्वान् परोपकारी हैं वे सच्चे ब्राह्मण और साधु हैं ।

[२२] अब उन्हीं छली कपटी स्वार्थी लोगों, मनुष्यों को ठगकर अपना प्रयोजन सिद्ध करने वालों ही का ग्रहण "पोप" शब्द से करना और ब्राह्मण तथा साधु नाम से उत्तम पुरुषों का स्वीकार करना योग्य है । देखो ! जो कोई भी उत्तम ब्राह्मण वा साधु न होता तो वेदादि सत्यशास्त्रों के पुस्तक स्वरसहित का पठनपाठन जैन, मुसलमान, ईसाई आदि के जाल से बच कर आर्यों को वेदादि सत्यशास्त्रों में प्रीतियुक्त वर्णाश्रमों में रखना, ऐसा कौन कर सकता ? सिवाय ब्राह्मण साधुओं के । 'विषादप्यमृतं ग्राह्यम्' मनु० [२ । २३९] विष से भी अमृत के ग्रहण करने के समान पोपलीला से बहकाने में से भी आर्यों का जैन आदि मतों से बच रहना जानो विष में अमृत के समान गुण समझना चाहिये ।